18-8-20

कीमत तन्त्र या कीमत प्रणाली की भूमिका

केन्द्रीय आर्थिक समस्याओं के अभिप्राय उन समस्याओं से है जो सभी अर्थव्यवस्था में समान रूप से पाई जाती है।

एक व्यक्ति की भाँति एक अर्थव्यवस्था के साधन भी सीमित होते हैं, साधनों की सीमितता अर्थव्यवस्था के समक्ष चयन की कठिन समस्या उत्पन्न करती है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था को अपनी उत्पादन इकाई की क्रियाओं को तय करने के लिए असीमित आवश्यकता और साधनों के बीच चयन करना पड़ता है। अर्थव्यवस्था की प्रमुख समस्याएँ हैं
① क्या उत्पादन किया जाए ② उत्पादन कैसे किया जाए ③ उत्पादन किसके लिए किया जाए। इसके अलावा कीमत तन्त्र या आर्थिक कार्य भी करता है ④ संसाधनों का कुशलतम उपयोग कैसे हो ⑤ आर्थिक विकास, जनसंख्या एवं रोजगार। अब हम देखेंगे कि इन समस्याओं का समाधान कीमत तन्त्र के द्वारा कैसे किया जाता है।

① क्या उत्पादन किया जाए — एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता की इच्छा, सर्वोपरि होती है और उसी की इच्छा के आधार पर उत्पादक यह निर्णय करता है कि किन वस्तु और सेवा का उत्पादन किया जाए। उपभोक्ता जिन वस्तुओं को अधिक पसन्द करता है उसके लिए वह अधिक मूल्य देने को तैयार रहता है। उत्पादक अधिकतम लाभ के लिए वे वस्तुएँ उत्पन्न करते हैं जिनकी उपभोक्ता अधिकतम इच्छा रखता है। प्रत्येक उत्पादक अपने संसाधनों को इस प्रकार प्रयोग करता है कि अधिकतम कीमत के रूप में उसे बाजार में अधिक लाभ मिले।

② उत्पादन कैसे किया जाए — प्रत्येक उत्पादक का उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है। प्रत्येक उत्पादक साधनों के उस संयोग को चुनता जाता है जिससे उसे न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सके। यदि श्रम की प्रति इकाई उत्पादन लागत पूँजी की तुलना में कम है तो उत्पादन में पूँजी की जगह श्रम का अधिक मात्रा में प्रयोग किया जायेगा। उत्पादन तकनीक का चयन उत्पादक इस आधार पर करता है कि अधिकतम लाभ एवं न्यूनतम लागत देने वाली सर्वश्रेष्ठ उत्पादन की तकनीक चुनी जाए

③ किसके लिए उत्पादन किया जाए — इसका समाधान कीमत प्रणाली द्वारा किया जाता है। जिन लोगों की आय अधिक होती है उन्हें राष्ट्रीय आय का अधिक भाग प्राप्त होता है अर्थात जिनकी आय अधिक होती है उनकी क्रय शक्ति अधिक है और वे अधिक वस्तुओं की माँग करते हैं। इसके विपरीत जिन लोगों की आय कम होती है वे कम वस्तुओं की माँग करते हैं और उत्पादनकर्ता उनकी माँग के अनुकूल ही उत्पादन करते हैं।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

19.5.2020

कीमत यन्त्र की सीमाएं — व्यवहारिक जीवन में कीमत यन्त्र के द्वारा आर्थिक क्रियाओं के संचालन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और वे सभी उद्देश्य नहीं प्राप्त कर पाता है। डा० बोल्डिंग के अनुसार कीमत यन्त्र में अन्य मानवीय रीतियों की भांति अनेक अपूर्णताएं हैं संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस प्रणाली की मुख्य सीमाएं निम्नलिखित हैं।

(1) अपूर्ण प्रतियोगिता में निष्क्रिय — कीमत प्रणाली के सफल संचालन के लिए यह आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण प्रतियोगिता हो। परन्तु वास्तविक जीवन में एकाधिकार तथा अपूर्ण प्रतियोगिता ही क्रियाशील रहती है। फलतः कीमत यन्त्र सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर पाता और साधनों का आवंटन भी विवेकपूर्ण नहीं हो पाता है।

(2) पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता — कीमत यन्त्र की यह मान्यता भी अवास्तविक है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है। जबकि व्यवहार में हम देखते हैं कि अनेक साधन बेरोजगार या अर्द्ध बेरोजगार रहते हैं। अतः स्वतंत्र कीमत प्रणाली में मानवीय तथा भौतिक साधनों का पूरी तरह उपयोग नहीं हो पाता है।

(3) साधनों में गतिशीलता का अभाव — कीमत प्रणाली मांग एवं पूर्ति के सन्तुलन में साधनों में पूर्ण प्रतियोगिता मान कर चलती है। जबकि व्यवहार में साधनों में पूर्ण गतिशीलता का अभाव होता है।

(4) आर्थिक असमानता — कीमत प्रणाली के सफल संचालन में आर्थिक असमानता बाधा उत्पन्न करती है। कम आय वालों की अपेक्षा अधिक आय वालों का साधनों पर अधिक नियन्त्रण होता है। इससे साधनों का अपनिर्देशन होता है।

(5) जन उपयोगी सार्वजनिक सेवाओं व वस्तुओं में क्रियाशीलता का अभाव — अस्पताल एवं चिकित्सा सुविधाएं शिक्षा, सड़क, पुलिस, न्याय आदि ऐसी सार्वजनिक सेवाएं हैं जिनमें कीमत प्रणाली असफल रहती है। कीमत प्रणाली तो सामान्यतः निजी वस्तुओं एवं सेवाओं पर ही क्रियाशील होती है और सार्वजनिक सेवाओं में यह क्रियाशील नहीं होता है।

(6) आर्थिक स्वतंत्रता एवं उपभोक्ताओं की सार्वभौमिकता का अभाव — आर्थिक स्वतंत्रता एवं उपभोक्ताओं की सार्वभौमिकता के अभाव के कारण कीमत प्रणाली मिथ्या सिद्ध होती है क्योंकि व्यवहारिक जीवन में सरकार के बढ़ते हस्तक्षेप से आर्थिक स्वतन्त्रता का अभाव रहता है।

(7) व्यापार चक्र का जन्म — कीमत प्रणाली अर्थव्यवस्था व्यापार चक्रों को जन्म देती है। तेजी एवं मंदी की हालत में आर्थिक साधनों के अपव्यय व दुरुपयोग को जन्म देती है। आर्थिक मंदी और आर्थिक तेजी दोनों ही साधनों के आवंटन को दूषपूर्ण बना देती हैं।

Scanned with CamScanner